

केनोपनिषद्

अनुवाद कर्ता: सञ्जय मोहन मित्तल

Kenopanishad

Translated by: Sañjay Mohan Mittal

सारांश

ईश्वर कौन है? उसका क्या स्वरूप है? वह क्या करता है? इन प्रश्नों का उत्तर उपनिषद्कार केनोपनिषद् में देने का प्रयास कर रहा है। ईशोपनिषद् के इस विचार, "ईश्वर इन्द्रियों का विषय नहीं है", को आगे बढ़ाते हुए केनोपनिषद् में ईश्वर को सब इन्द्रियों में निहित बल का कारण बताया गया है। परन्तु साथ ही में यह भी स्पष्ट कर दिया गया है कि इन्द्रियाँ ईश्वर से बल तो प्राप्त करती है परन्तु ईश्वर उनकी पहुँच से परे है। इस उपनिषद् में शारीरिक इन्द्रियों के अलावा जड प्रकृति के बल को भी ईश्वर का ही बल बतलाया गया है। ईश्वर को जानने का दम्भ करने वालो से सचेत रहने का निर्देश है। वेदों और उनके छः अंगों का अध्ययन कर सत्य मार्ग पर जीवन बिताने से ही ब्रह्म की प्राप्ति होती है, अतः अपना जीवन इसी मार्ग पर चलते हुए व्यतीत करें।

ध्यान देने योग्य बात है कि ईश्वर सभी इन्द्रियों का बल, उर्जा व शक्ति अवश्य है परन्तु उस बल के उपयोग अर्थात् कर्म की स्वतन्त्रता ईश्वर ने हमें ही दे दी है। यदि कर्म अच्छे हो तो मन में अहंकार न आने दें क्योंकि कर्म का बल तो ईश्वर ने ही प्रदान किया है। और यदि उस बल का दुरुपयोग कर बुरे कर्म करें तो ईश्वर को दोष न दें अपितु दण्ड के लिए तैयार रहें क्योंकि आचरण धर्म के विरुद्ध था।

Synopsis

Who is God? What are his qualities? What does he do? The sages have explained the answers to these questions in Kenopaniṣhad. Kenopaniṣhad extends the idea laid out in Eeshopaniṣhad that God is not a subject matter of the sensory organs. This Upaniṣhad describes God to be the causal force behind all senses. However, it clarifies that despite God being that force, he is beyond comprehension by the sensory organs. Besides, the sensory organs, God is also the only driving force for the Mother Nature as well. This Upaniṣhad cautions us against the egotists who claim to know God. The only way to be near God is to spend our life acquiring knowledge from the four Vedas and their six limbs and implementing this knowledge in our life.

Please keep in mind that God may be the source of energy, strength and functionality of our bodily organs, however, he has granted us the

freedom of action, i.e. the freedom to choose on how we want to utilize this power. If our actions are virtuous, then we should stay away from the arrogance resulting from good actions because, they were made possible only with God's strength. On the contrary if an individual choses to misuse this power for selfish and malicious actions then one should not blame God, and be ready for punishment because the power was not used for intended purposes.

प्रथम खण्ड

प्रथम मन्त्र में इन्द्रियों के पीछे निहित बल पर प्रश्न किया गया है।

ॐ केनेषितं पतति प्रेषितं मनः केन प्राणः प्रथमः प्रैति युक्तः ।

केनेषितां वाचमिमां वदन्ति चक्षुः श्रोत्रं क उ देवो युनक्ति ॥१॥

ॐ केन इषितम् पतति प्रेषितम् मनः केन प्राणः प्रथमः प्रैति युक्तः ।

केन इषिताम् वाचम् इमाम् वदन्ति चक्षुः श्रोत्रम् कः उ देवः युनक्ति ॥

(ॐ) सृष्टि के मूलाधार परम पिता परमेश्वर का स्मरण कर शिष्य ऋषि से यह प्रश्न पूछते हैं; (केन) किसकी (इषितम्) प्रेरणा से (मनः) मन इन्द्रियों के विषयों (प्रेषितम्) की ओर (पतति) गिरता है? (केन) कौन प्राणियों में जन्म लेते ही (प्राणः) श्वास की गति को (प्रैति) भली प्रकार (प्रथमः) आरम्भ (युक्तः) करता है? (केन) किसकी (इषिताम्) प्रेरणा से (इमाम्) यह (वाचम्) वाणी (वदन्ति) बोलती है? (चक्षुः) आँखों में दृष्टि और (श्रोत्रम्) कानों में सुनने की शक्ति (कः) किस (देवः) देवता ने (उ) सुनिश्चित (युनक्ति) कर दी हैं?

Part 1

The first mantra raise a question about the force that drives our sensory organs.

**1. Om ken-eṣhitam patati preṣhitam manah
kena praanaḥ prathamah praiti yuktaḥ
ken-eṣhitaam vaacham-imaam vadanti
chakṣhuḥ shrotraṁ ka u devo yunakti**

(om) Meditating on God as the source of all creation, a disciple asks his teacher; By (ken) whose (eṣhitam) will does the (manah) mind (patati) gravitate (preṣhitam) towards sensory pleasures? (prathamah) Immediately after a being is born, (kena) who ensures to (praiti) properly (yuktaḥ) induce the lungs to (praanaḥ) breathe? (ken) Who is the (eṣhitaam) causal force that induces (vadanti)

speech in (*imaam*) this (*vaacham*) mouth? (*ka*) Who is that (*devo*) divine power who (*u*) ensures that our (*chakṣhuḥ*) eyes and (*shrotraṇ*) ears are (*yunakti*) functional?

दूसरे मन्त्र में पहले मन्त्र के उत्तर में ईश्वर को ही इन्द्रियों को चलाने वाले बल के रूप में माना है।
श्रोत्रस्य श्रोत्रं मनसो मनो यद्वाचो ह वाचः स उ प्राणस्य प्राणः ।

चक्षुषश्चक्षुरतिमुच्य धीराः प्रेत्यास्माल्लोकादमृता भवन्ति ॥२॥

श्रोत्रस्य श्रोत्रम् मनसः मनः यत् वाचः ह वाचम् सः उ प्राणस्य प्राणः ।

चक्षुषः चक्षुः अतिमुच्य धीराः प्रेत्य अस्मात् लोकात् अमृताः भवन्ति ॥

(यत्) जो (श्रोत्रस्य) कानों की (श्रोत्रम्) श्रवण शक्ति है, जो (मनसः) मन में (मनः) भावना है, जो (वाचः) वाणी में (वाचम्) बोल है, (सः) वह (ह) ही (उ) निश्चित रूप से (प्राणस्य) नासिका का (प्राणः) श्वास और (चक्षुषः) आँखों की (चक्षुः) दृष्टि है। यही जानकर (धीराः) स्थिर बुद्धि वाले धीर लोग (अतिमुच्य) इन्द्रियों के विषयों में लिप्त न होकर (अस्मात्) इस (लोकात्) लोक को छोड़कर (प्रेत्य) मृत्योपरान्त (अमृताः) मोक्ष को प्राप्त (भवन्ति) होते हैं।

Replying to the question raised in the first mantra, the second mantra determines that God is the force behind all senses.

**2. Om shrotrasya shrotram manaso mano
yad-vaacho ha vaacham sa u praanasya praanah
chakṣhuṣhash-chakṣhur-atimuchya dheeraah
pretya-asmaal-lokaad-amṛitaa bhavanti**

(sa) He (yad) who is the (shrotram) hearing (shrotrasya) in the ears, the (mano) emotions (manaso) in the mind, the (vaacham) words in the (vaacho) speech, is (ha) most (u) definitely the (praanah) breath (praanasya) in the nostrils and the (chakṣhur) sight (chakṣhuṣhash) in the eyes, as well. Realizing this fact, the learned (dheeraah) unwavering souls (atimuchya) do not get attached to the material pleasures in (asmaal) this (lokaad) World and (bhavanti) attain (amṛitaa) nirvana after their (pretya) death.

तीसरे मन्त्र में बतलाया गया है कि ईश्वर इन्द्रियों से परे है।

न तत्र चक्षुर्गच्छति न वाग्गच्छति नो मनो न विद्वो न विजानीमो

यथैतदनुशिष्यादन्यदेव तद्विदितादथो अविदितादधि ।

इति शुश्रुम पूर्वेषां ये नस्तद् व्याचक्षिरे ॥३॥

न तत्र चक्षुः गच्छति न वाग् गच्छति नो मनः न विद्वः न विजानीमः यथा एतद् अनुशिष्यात् अन्यद् एव तद् विदितात् अथ उ अविदितात् अधि । इति शुश्रुम पूर्वेषाम् ये नः तद् व्याचक्षिरे ॥

वह इन्द्रियों का तो बल है परन्तु वह ईश्वर इन्द्रियों का विषय नहीं है। (तत्र) वहाँ (चक्षुः) आँखों की दृष्टि (न) नहीं (गच्छति) पहुँच पाती है, (न) न ही (वाग्) वाणी का स्वर (गच्छति) पहुँच पाता है, (नो) न ही (मनः) मन और (न) न (विद्वः) ज्ञान उस तक पहुँचता है, (न) न ही यह (विजानीमः) जान पाते हैं कि (अनुशिष्यात्) शिष्यों को (एतद्) उसके विषय में (यथा) कैसे उपदेश दें क्योंकि (तद्) वह (विदितात्) विदित से (एव) भी (अन्यद्) अलग है (अथ) और (अविदितात्) अविदित से भी (उ) निश्चित रूप से अलग (अधि) विषय है। (पूर्वेषाम्) पूर्वजों और ऋषियों ने (ये) जो (तद्) उसकी (व्याचक्षिरे) व्याख्या की है उसमें भी (नः) हम (इति) यही (शुश्रुम) सुनते आए हैं ।

The third mantra determines that God is beyond the comprehension of any of the sense.

3. Om na tatra chakṣhur-gachchhati

na vaag-gachchhati

no mano na vidmo

na vijaaneemo yatha-itad-anuśiṣhyaad

anyad-eva tad-viditaad-atho aviditaad-adhi

iti shushruma poorveṣhaam ye nas-tad vyaacha-chakṣhire

God is the force behind the senses, however he is beyond comprehension by any of the senses. (na) Neither can the (chakṣhur) sight (gachchhati) reach (tatra) there, (na) nor can the (vaag) speech, (no) neither can the (mano) mind (na) nor can the (vidmo) knowledge. We don't (na) even (vijaaneemo) properly know (yatha) how to (anuśiṣhyaad) preach (itad) about him to the disciples. (tad) He (eva) is (anyad) different from what is (viditaad) known to us (atho) and from what is (aviditaad) unknown (our imaginations) (adhi) as well. (iti) This is (tad) what (nas) we have (shushruma) heard from our (poorveṣhaam) ancestors and ancient sages in (ye) their (vyaacha-chakṣhire) discourses.

चौथे मन्त्र में बतलाया गया है कि ईश्वर वाणी से परे है।

यद्वाचानभ्युदितं येन वागभ्युद्यते ।

तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यदिदमुपासते ॥४॥

यत् वाचा अनभ्युदितम् येन वाग् अभ्युद्यते ।

तत् एव ब्रह्म त्वम् विद्धि न इदम् यत् इदम् उपासते ॥

(येन) जिसके बल से (वाग्) वाणी (अभ्युद्यते) भाव प्रकट करती है परन्तु (वाचा) वाणी से (यत्) उसका (अनभ्युदितम्) वर्णन नहीं किया जा सकता, (तत् एव) उसी को (त्वम्) तू (ब्रह्म) ब्रह्म (विद्धि) जान; (इदम्) उसको (न) नहीं (यत्) जिसकी (इदम्) यहाँ ज्यादातर लोग (उपासते) उपासना करते हैं ।

Fourth mantra determines that God is beyond any description by words.

**4. Om yad-vaacha-anabhyuditañ yena vaag-abhyudyate
tad-eva brahma tvam viddhi nedañ yad-idam-upaasate**

(yena) He is the force that (abhyudyate) enables us to express our thoughts via (vaag) speech. However, (yad) he is (anabhyuditañ) beyond any description via (vaacha) spoken words. (tvam) You should (eva) only (viddhi) consider (tad) him as the (brahma) Supreme Lord and (nedañ) not anyone else (yad) who is being (upaasate) worshipped by others (idam) here, in this World.

पाँचवे मन्त्र में बतलाया गया है कि ईश्वर मन से परे है।

यन्मनसा न मनुते येनाहुर्मनो मतम् ।

तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यदिदमुपासते ॥५॥

यत् मनसा न मनुते येन आहुः मनः मतम् ।

तत् एव ब्रह्म त्वम् विद्धि न इदम् यत् इदम् उपासते ॥

(आहुः) कहते हैं कि (येन) जिसकी प्रेरणा से (मनः) मन (मतम्) मनन करता है परन्तु (मनसा) मन (यत्) जिसको (मनुते) मनन कर जान (न) नहीं सकता, (तत् एव) उसी को (त्वम्) तू (ब्रह्म) ब्रह्म (विद्धि) जान; (इदम्) उसको (न) नहीं (यत्) जिसकी (इदम्) यहाँ ज्यादातर लोग (उपासते) उपासना करते हैं ।

Fifth mantra determines that God is beyond comprehension by mind.

**5. Om yan-manasaa na manute yen-aahur-mano matam
 tad-eva brahma tvam viddhi nedañ yad-idam-upaasate**

(aahur) It is said that that (mano) mind derives the (matam) thinking power from (yen) him. However, the (manasaa) mind (na) can not (manute) comprehend (yan) him. (tvam) You should (eva) only (viddhi) consider (tad) him as the (brahma) Supreme Lord and (nedañ) not anyone else (yad) who is being (upaasate) worshipped by others (idam) here, in this World.

छठे मन्त्र में बतलाया गया है कि ईश्वर दृष्टि से परे है।

यच्चक्षुषा न पश्यति येन चक्षूषि पश्यति ।

तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यदिदमुपासते ॥६॥

यत् चक्षुषा न पश्यति येन चक्षूषि पश्यति ।

तत् एव ब्रह्म त्वम् विद्धि न इदम् यत् इदम् उपासते ॥

(येन) जिसके द्वारा (चक्षूषि) नेत्र (पश्यति) देखते हैं परन्तु (यत्) जो (चक्षुषा) नेत्रों से (पश्यति) दिखाई (न) नहीं देता, (तत् एव) उसी को (त्वम्) तू (ब्रह्म) ब्रह्म (विद्धि) जान; (इदम्) उसको (न) नहीं (यत्) जिसकी (इदम्) यहाँ ज्यादातर लोग (उपासते) उपासना करते हैं ।

Sixth mantra determines that God is beyond comprehension by sight.

**6. Om yach-chakṣhuṣhaa na pashyati yena chakṣhoomṣhi pashyati
 tad-eva brahma tvam viddhi nedañ yad-idam-upaasate**

(yena) He enables our (chakṣhoomṣhi) eyes (pashyati) to see. However, (yach) he (na) can not (pashyati) be seen by the (chakṣhuṣhaa) eyes. (tvam) You should (eva) only (viddhi) consider (tad) him as the (brahma) Supreme Lord and (nedañ) not anyone else (yad) who is being (upaasate) worshipped by others (idam) here, in this World.

सातवें मन्त्र में बतलाया गया है कि ईश्वर श्रवण शक्ति से परे है।

यच्छ्रोत्रेण न शृणोति येन श्रोत्रमिदं श्रुतम् ।

तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यदिदमुपासते ॥७॥

यत् श्रोत्रेण न शृणोति येन श्रोत्रम् इदम् श्रुतम् ।

तत् एव ब्रह्म त्वम् विद्धि न इदम् यत् इदम् उपासते ॥

(येन) जिसके द्वारा (इदम्) यह (श्रोत्रम्) कान (श्रुतम्) सुनते हैं परन्तु (यत्) जो (श्रोत्रेण) कानों से (शृणोति) सुनाई (न) नहीं देता, (तत् एव) उसी को (त्वम्) तू (ब्रह्म) ब्रह्म (विद्धि) जान; (इदम्) उसको (न) नहीं (यत्) जिसकी (इदम्) यहाँ ज्यादातर लोग (उपासते) उपासना करते हैं ।

Seventh mantra determines that God is beyond comprehension by hearing.

7. Om yach-chhrotreṇa na śrīṇoti yena shrotram-idam shrutam tad-eva brahma tvam viddhi nedañ yad-idam-upaasate

(yena) He enables (idam) these (shrotram) ears to (shrutam) hear. However, (yach) he (na) can not (śrīṇoti) be heard by the (chhrotreṇa) ears. (tvam) You should (eva) only (viddhi) consider (tad) him as the (brahma) Supreme Lord and (nedañ) not anyone else (yad) who is being (upaasate) worshipped by others (idam) here, in this World.

आठवें मन्त्र में बतलाया गया है कि ईश्वर घ्राण शक्ति से परे है।

यत्प्राणेन न प्राणिति येन प्राणः प्रणीयते ।

तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यदिदमुपासते ॥८॥

यत् प्राणेन न प्राणिति येन प्राणः प्रणीयते ।

तत् एव ब्रह्म त्वम् विद्धि न इदम् यत् इदम् उपासते ॥

(येन) जिसके द्वारा (प्राणः) नासिका (प्रणीयते) श्वास लेती है परन्तु (यत्) जिसको (प्राणेन) नासिका (प्राणिति) श्वास के साथ (संघ) (न) नहीं ले सकती, (तत् एव) उसी को (त्वम्) तू (ब्रह्म) ब्रह्म (विद्धि) जान; (इदम्) उसको (न) नहीं (यत्) जिसकी (इदम्) यहाँ ज्यादातर लोग (उपासते) उपासना करते हैं ।

Eighth mantra determines that God is beyond comprehension by smell.

**8. Om yat-praanaena na praaniti yena praanaḥ praneeyate
tad-eva brahma tvam viddhi nedañ yad-idam-upaasate**

(yena) He induces the (praneeyate) breathing in the (praanaḥ) nose. However, (yat) he (na) can not be comprehended (sniffed) by the (praaniti) breath in the (praanaena) nostrils. (tvam) You should (eva) only (viddhi) consider (tad) him as the (brahma) Supreme Lord and (nedañ) not anyone else (yad) who is being (upaasate) worshipped by others (idam) here, in this World.

द्वितीय खण्ड

प्रथम मन्त्र में यह विचार किया गया है कि क्या कोई ईश्वर के विषय में पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर सकता है।

यदि मन्यसे सुवेदेति दध्रमेवापि नूनं त्वं वेत्थ ब्रह्मणो रूपम् ।

यदस्य त्वं यदस्य च देवेष्वथ नु मीमांस्यमेव ते मन्ये विदितम् ॥१॥

यदि मन्यसे सु वेद इति दध्रम् एव अपि नूनम् त्वम् वेत्थ ब्रह्मणः रूपम् ।

यत् अस्य त्वम् यत् अस्य च देवेषु अथ नु मीमांस्यम् एव ते मन्ये विदितम् ॥

मैं (ते) तेरे (विदितम्) ज्ञान को (मन्ये) समझता हूँ। (यदि) यदि तू (मन्यसे) समझता है कि (त्वम्) तू (ब्रह्मणः) ब्रह्म के (रूपम्) स्वरूप को (सु) भली भांति (वेद) जानता है (अपि) तो (नूनम्) निश्चय (एव) ही तू (इति) उसके स्वरूप को (दध्रम्) बहुत कम (वेत्थ) जानता है, क्योंकि ईश्वर के स्वरूप (अस्य) को (यत्) जो (त्वम्) तू जानता है (च) और (यत्) जो (देवेषु) विद्वानों ने (अस्य) उसका वर्णन किया है (अथ) वह सब (नु) निश्चय (एव) ही उनकी (मीमांस्यम्) अनिर्णीत राय है। इसलिए उस ब्रह्म के स्वरूप पर निरन्तर विचार करना चाहिए।

Part 2

The first mantra ponders over a question. Can someone achieve complete understanding of God?

**1. Om yadi manyase su-ved-eti dabhram-eva-api
noonan tvam vettha brahmaṇo roopam
yad-asya tvañ yad-asya cha deveṣhv-atha nu
meemaansyam-eva te manye viditam**

I am (*manye*) aware of (*te*) your (*viditam*) knowledge. (*yadi*) If (*tvam*) you (*manyase*) believe that you (*ved*) understand (*brahmaṇo*) God's (*roopam*) qualities (*su*) very well (*api*) then (*eva*) most (*noonan*) definitely, you (*vettha*) know (*dabhram*) very little about (*eti*) him; because (*yad*) whatever (*tvañ*) you know (*asya*) about him (*cha*) and also (*yad*) whatever the (*deveṣhv*) scholars have said (*asya*) about him, (*atha*) are (*eva*) most (*nu*) definitely mere (*meemaansyam*) biased opinions based on their own observations and experiences. We should therefore, continue to ponder on this subject continuously throughout our life.

दूसरे मन्त्र में यह विचार है कि ईश्वर के स्वरूप का पूर्ण ज्ञान असम्भव है ।

नाहं मन्ये सुवेदेति नो न वेदेति वेद च ।

यो नस्तद्वेद तद्वेद नो न वेदेति वेद च ॥२॥

न अहम् मन्ये सु वेद इति नो न वेद इति वेद च ।

यः नः तत् वेद तत् वेद नो न वेद इति वेद च ॥

(न) न (अहम्) मैं (इति) यह (मन्ये) मानता हूँ कि मैं इसे (सु) भली प्रकार (वेद) जानता हूँ (च) और (नो) न ही यह कि मैं इसको बिल्कुल भी (न) नहीं (वेद) जानता क्योंकि (इति) यह तो (वेद) जानता ही हूँ कि ब्रह्म है । (नः) हममें से (यः) जो यह कहे कि मैं (वेद) जानता हूँ तो वह (इति) बस (तत्) मात्र उतना ही (वेद) जानता है। (तत्) मात्र उतना (वेद) जानने के कारण अज्ञानी तो (नो) नहीं है (च) और पूरा (वेद) जानता भी (न) नहीं है ।

The second mantra states that it is impossible for anyone to completely know God.

**2. Om na-aham manye su-ved-eti no na ved-eti veda cha
 yo nas-tad-veda tad-veda no na ved-eti veda cha**

(*na*) Neither do (*aham*) I (*manye*) believe (*eti*) that I (*su*) properly (*ved*) know him (*cha*) and (*no*) nor (*eti*) that I do (*na*) not (*ved*) know him at all because at the very least I (*veda*) know that he exists. (*yo*) Whosoever amongst (*nas*) us claims that he (*veda*) knows God, he only (*veda*) knows (*tad*) that much about God. (*eti*) By virtue of (*tad*) this little (*veda*) knowledge he is (*no*) not completely ignorant (*cha*) and does (*na*) not have complete (*ved*) knowledge either.

तीसरा मन्त्र दूसरे मन्त्र का विचार आगे बढ़ाता है ।

यस्यामतं तस्य मतं मतं यस्य न वेद सः ।

अविज्ञातं विजानतां विज्ञातमविजानताम् ॥३॥

यस्य अमतम् तस्य मतम् मतम् यस्य न वेद सः ।

अविज्ञातम् विजानताम् विज्ञातम् अविजानताम् ॥

ब्रह्म ज्ञान का दम्भ भरने वाले अहंकारी, अज्ञानी और पाखण्डी हैं । (यस्य) जिसने यह माना कि वह ईश्वर को (अमतम्) नहीं जान पाया (तस्य) उसने ईश्वर को (मतम्) जान लिया और (यस्य) जिसने यह दावा किया कि उसने ईश्वर को (मतम्) जान लिया है उसने (सः) उसको (न) नहीं (वेद) जाना । (विजानताम्) जानने का दावा करने वालो तो लिए वह (अविज्ञातम्) अविज्ञात है और (अविजानताम्) न जानने वाले विनम्र लोगों के लिए वह (विज्ञातम्) विज्ञात है क्योंकि ईश्वर के विषय में यही सत्य है कि उसे पूर्णतया जाना ही नहीं जा सकता ।

The third mantra extends the idea proposed in the second mantra.

3. Om yasya-amatan tasya matam matañ yasya na veda saḥ avijñaatam vijaanataam vijñaatam-avijaanataam

Whoever claims to know God, is an egoistical illiterate hypocrite. (yasya) The one who believes that he (amatan) does not know God, (tasya) he actually (matam) knows God and the one who believes that he (matañ) knows God, (yasya) he actually does (na) not (veda) know (saḥ) him. God is (avijñaatam) unknown to the people who (vijaanataam) claim to know him and is (vijñaatam) known to the people who claim that they (avijaanataam) do not know him, because, the only truth about God is that he can not be completely known.

चौथे मन्त्र में मोक्ष का मार्ग बतलाया गया है।

प्रतिबोधविदितं मतममृतत्वं हि विन्दते ।

आत्मना विन्दते वीर्यं विद्यया विन्दतेऽमृतम् ॥४॥

प्रति बोधः विदितम् मतम् अमृतत्वम् हि विन्दते ।

आत्मना विन्दते वीर्यम् विद्यया विन्दते अमृतम् ॥

जो इन्द्रियों के (बोधः) विषयों को (विदितम्) समझकर जो उनसे (प्रति) बाहर निकलने का (मतम्) मन बनाता है वह (हि) निश्चित ही (अमृतत्वम्) मोक्ष (विन्दते) प्राप्त करता है। (आत्मना) आत्म शक्ति से (वीर्यम्) बल (विन्दते) प्राप्त कर वह इस (विद्यया) ज्ञान के द्वारा (अमृतम्) मोक्ष (विन्दते) प्राप्त करता है। मानसिक बल के बिना मनुष्य इन्द्रियों के विषयों में ही फँसा रहता है।

The fourth mantra shows the path to nirvana.

**4. Om pratibodha-viditam matam-amṛita-tvañ hi vindate
 aatmanaa vindate veeryam vidyayaa vindate'mṛitam**

One, who (*bodha*) understands the role of senses and utilizes this (*viditam*) knowledge to find a way to (*prati*) detach one's (*matam*) mind from the bondage of sensory pleasures, (*hi*) definitely (*vindate*) attains (*amṛita-tvañ*) nirvana. Leveraging on the (*aatmanaa*) inner strength one (*vindate*) develops mental (*veeryam*) strength and utilizing this (*vidyayaa*) knowledge one (*vindate*) attains (*amṛitam*) nirvana. A human lacking mental strength is caught in the web of sensory pleasures forever.

पाँचवाँ मन्त्र चौथे मन्त्र के विचार को आगे बढ़ाता है ।

इह चेदवेदीदथ सत्यमस्ति न चेदिहावेदीन्महती विनष्टिः ।

भूतेषु भूतेषु विचित्य धीराः प्रेत्यास्माल्लोकादमृता भवन्ति ॥५॥

इह चेत् अवेदीत् अथ सत्यम् अस्ति न चेत् इह अवेदीत् महती विनष्टिः ।

भूतेषु भूतेषु विचित्य धीराः प्रेत्य अस्मात् लोकात् अमृताः भवन्ति ॥

(इह) इस जीवन काल में (चेत्) यदि (अवेदीत्) आत्मज्ञान को जान लिया (अथ) तो जीवन का उद्देश्य (सत्यम्) सत्य सिद्ध (अस्ति) हुआ और (चेत्) यदि (इह) इस जन्म में इस ज्ञान को (न) नहीं (अवेदीत्) जाना तो (महती) महा (विनष्टिः) विनाश है । (धीराः) धैर्यवान (भूतेषु भूतेषु) पाँच भूतों में (वचित्य) विचार पूर्वक ईश्वर को मूल तत्त्व जानकर (प्रेत्य) मरणोपरान्त (अस्मात्) इस (लोकात्) लोक से मुक्त होकर (अमृताः) मोक्ष को (भवन्ति) प्राप्त होते हैं ।

The fifth mantra extends the idea propounded in the fourth mantra.

**5. Om iha ched-avedeed-atha satyamasti
na-ched-iha-avedeen-mahatee vinaṣṭiḥ
bhooteṣhu bhooteṣhu vichitya dheeraaḥ
pretya-asmaal-lokaad-amṛitaa bhavanti**

(ched) If during (iha) this life one (avedeed) attains this knowledge (atha) then the purpose of this life (asti) is (satyam) successful and (ched) if this (avedeen) knowledge is (na) not attained then (iha) the life is a (mahatee) big (vinaṣṭiḥ) disaster. (dheeraaḥ) Mentally stable people (vichitya) understand that God is the source of (bhooteṣhu bhooteṣhu) all five elements and (pretya) upon death they (bhavanti) attain (amṛitaa) salvation from (asmaal) this (lokaad) cycle of life and death.

तृतीय खण्ड

प्रथम मन्त्र में कर्म के अहंकार से दूर हो कर्म को समर्पण के भाव से करने के उपदेश का आरम्भ है ।

ब्रह्म ह देवेभ्यो विजिग्ये तस्य ह ब्रह्मणो विजये देवा अमहीयन्त ।

त ऐक्षन्तास्माकमेवायं विजयोऽस्माकमेवायं महिमेति ॥१॥

ब्रह्म ह देवेभ्यः विजिग्ये तस्य ह ब्रह्मणः विजये देवाः अमहीयन्त ।

ते ऐक्षन्त अस्माकम् एव अयम् विजयः अस्माकम् एव अयम् महिमा इति ॥

(ह) निश्चय ही (ब्रह्म) ब्रह्म ने (देवेभ्यः) देवताओं (विद्वानों) के लिए (विजिग्ये) धर्म का मार्ग प्रशस्त किया (विजय प्राप्त की) परन्तु वह (देवाः) देवता (ब्रह्मणः) ब्रह्म (तस्य) की इस (विजये) विजय से अपने मार्ग के अवरोधों को हटता देख खुद को (ह) ही (अमहीयन्त) बड़ा समझने लगे । (ते) उन्होंने (इति) इस प्रकार (ऐक्षन्त) सोचा कि (अयम्) यह (अस्माकम्) हमारी (एव) ही (विजयः) विजय है और (अयम्) यह (महिमा) महिमा भी (अस्माकम्) हमारी (एव) ही है ।

Part 3

The first mantra states a directive for human race. The directive is to get rid of the arrogance derived from one's actions and instead to perform action with a serving attitude.

**1. Om brahma ha devebhyo vijigye
 tasya ha brahmaṇo vijaye devaa amaheeyanta
 ta aikṣhanta-asmaakam-eva-ayam vijayo
 'smaakam-eva-ayam mahim-eti**

(ha) Definitely, it is (brahma) God, who emerged (vijigye) victorious by removing the obstacles from the paths of (devebhyo) the devataas and the scholars. However, not encountering obstacles due to (tasya) that (brahmaṇo) God's (vijaye) victory, the devatas (devaa) started to believe that this was due to (amaheeyanta) their own powers. (ta) They (aikṣhanta) thought (eti) that (ayam) this was (ha) definitely (asmaakam) their (vijayo) victory (eva) and was due to (asmaakam) their own (mahim) greatness.

दूसरे मन्त्र में ब्रह्म का यक्ष के रूप में दिखाई देना आलंकारिक है जो सिर्फ बात को समझाने के लिए लिखा गया है । यह वास्तविक नहीं है क्योंकि दूसरे खण्ड से यह स्पष्ट है कि परमात्मा आँखों से दिखाई नहीं देता ।

तद्वैषां विजज्ञौ तेभ्यो ह प्रादुर्बभूव ।

तन्न व्यजानत किमिदं यक्षमिति ॥२॥

तत् एषाम् विजज्ञौ तेभ्यः ह प्रादुर्बभूव ।

तत् न व्यजानत किम् इदम् यक्षम् इति ॥

(एषाम्) देवताओं के अहंकार को (ह) निश्चय से (विजज्ञौ) भाँपकर (तत्) वह परमात्मा (तेभ्यः) उनके सामने (प्रादुर्बभूव) प्रकट हुआ । देवता (तत्) उसको देखकर (इति) यह (न) न (व्यजानत) समझ पाए कि (इदम्) यह (यक्षम्) महान यक्ष (किम्) कौन है ।

In order to make a point, the second mantra metaphorically describes the appearance of God. This is not a real situation because Part 2 clearly states that God can not be viewed with eyes.

**2. Om taddh-aīṣhaam vijajñau tebhyo ha praadur-babhoova
tan-na vyajaanata kim-idañ yakṣham-iti**

(taddh) He (God) (ha) most definitely (vijajñau) sensed (aiṣhaam) their big-headedness and (praadur-babhoova) appeared before (tebhyo) them. Devatas, saw (tan) him but could (na) not (vyajaanata) figure out (kim) who (idañ) this (yakṣham) great being was.

तीसरे मन्त्र में देवताओं ने अग्नि से जानकारी चाही ।

तेऽग्निमब्रुवञ्जातवेद एतद्विजानीहि

किमेतद्यक्षमिति तथेति ॥३॥

ते अग्निम् अब्रुवत् जातवेदः एतत् विजानीहि

किम् एतत् यक्षम् इति तथा इति ॥

(ते) वे (अग्निम्) अग्नि से (अब्रुवत्) बोले (जातवेदः) हे जातवेदस् अग्नि! (एतत्) यह (विजानीहि) पता लगाओं की (एतत्) यह (यक्षम्) यक्ष (किम्) कौन है । अग्नि ने (इति) इस आग्रह को (तथा) वैसे (इति) ही स्वीकार कर कहा बहुत अच्छा ।

In the third mantra the devatas ask the fire to find about this unknown being.

**3. Om te'gnim-abruvañ-jaataveda etad-vijaaneehi
Kim-etad-yakṣham-iti tath-eti**

(te) They (abruvañ) said to (agnim) the fire, O (jaataveda) All Knowing Fire! Please (vijaaneehi) inquire that (Kim) who (etad) this (yakṣham) great being is. The fire accepted (iti) this request (tath) as (eti) is.

चौथे मन्त्र में अग्नि ने यक्ष को अपना परिचय दिया ।

तदभ्यद्रवत्तमभ्यवदत्कोऽसीत्यग्निर्वा

अहमस्मीत्यब्रवीज्जातवेदा वा अहमस्मीति ॥४॥

तत् अभ्यद्रवत् तम् अभ्यवदत् कः असि इति अग्निः वै

अहम् अस्मि इति अब्रवीत् जातवेदाः वै अहम् अस्मि इति ॥

(तत्) अग्निदेव (अभ्यद्रवत्) तुरन्त भागकर यक्ष के पास पहुँचे । यक्ष ने (तम्) उससे (अभ्यवदत्) पूछा तू (कः) कौन (असि) है? अग्निदेव ने (वै) निश्चयपूर्वक (इति) यह (अब्रवीत्) कहा (अहम्) मैं (अग्निः) अग्नि (अस्मि) हूँ (अहम्) मैं (जातवेदाः) सबकुछ जानने वाला (अस्मि) हूँ ।

In the fourth mantra the fire introduces itself to the unknown being.

**4. Om tad-abhy-adravat-tam-abhy-avadat-ko'se-ety-agnir-vaa
aham-asme-ety-abraveej-jaatavedaa vaa aham-asme-eti**

(tad) The fire (abhyadravat) quickly went close to the unknown being. Then that being (abhyavadat) asked (tam) him "(ko) Who (ase) are you?" The (agnir) fire (vaa) forcefully (abraveej) said "(aham) I (asme) am the (jaatavedaa) all knowing fire."

पाँचवे मन्त्र में अग्नि ने अपने बल का बखान किया ।

तस्मिंस्त्वयि किं वीर्यमित्यपीदं सर्वं

दहेयं यदिदं पृथिव्यामिति ॥५॥

तस्मिन् त्वयि किम् वीर्यम् इति अपि इदम् सर्वम्

दहेयम् यत् इदम् पृथिव्याम् इति ॥

उसने (तस्मिन्) उस अग्नि से पूछा (त्वयि) तेरा (किम्) क्या (वीर्यम्) बल है? अग्नि ने (इति) यह कहा (इदम्) इस (पृथिव्याम्) पृथ्वी पर (यत्) जो कुछ (अपि) भी है (इदम्) वह (सर्वम्) सब मैं (दहेयम्) जलाकर भस्म कर सकता हूँ।

In the fifth mantra the fire boasts its quality.

**5. Om tasmins-tvayi kim veeryam-ity-apeedaṃ sarvan
daheyañ yad-idam pṛithivyaam-iti**

He then asked (*tasmins*) the fire, “(*kim*) What is (*tvayi*) your (*veeryam*) capability?”
The fire said “(*sarvan*) everything (*yad*) that (*ity*) there is (*ape*) on (*idam*) this
(*pṛithivyaam*) Earth (*daheyañ*) I can burn (*edaṃ*) it (*iti*) all.”

छठे मन्त्र में अग्नि का शक्ति परिक्षण है ।

तस्मै तृणं निदधावेतद्देति तदुपप्रेयाय सर्वजवेन तन्न शशाक दग्धुम् ।

स तत एव निववृते नैतदशकं विज्ञातुं यदेतद्यक्षमिति ॥६॥

तस्मै तृणम् निदधौ एतत् दह इति तत् उप प्र इयाय सर्वजवेन तत् न शशाक दग्धुम् ।

सः ततः एव निववृते न एतत् अशकम् विज्ञातुम् यत् एतत् यक्षम् इति ॥

यक्ष ने (तस्मै) उसके सामने एक (तृणम्) तिनका (निदधौ) रखा और (इति) यह कहा कि
(एतत्) इसको (दह) जलाकर दिखाओ । अग्नि (सर्वजवेन) पूरे जोर के साथ (तत्) उस तिनके
के (उप) पास (प्र इयाय) गया परन्तु (तत्) उसको (दग्धुम्) जलाने में (शशाक) समर्थ (न) नहीं
हुआ । (एव) तब (सः) वह अग्निदेव (ततः) वहाँ से (एतत्) यह कहता हुआ (निववृते) लौट
आया कि (यत्) जो (इति) यह (यक्षम्) यक्ष है (एतत्) इसको (विज्ञातुम्) जानने में मैं (अशकम्)
सफल (न) नहीं हुआ ।

In the sixth mantra the strength of the fire is being tested.

**6. Om tasmai tṛiṇan nidadhaav-etad-daheti
tad-upa-preyaaya sarva-javena tan-na shashaaka dagdhum
sa tata eva nivavṛite
na-itad-ashakam vijñāatuñ yad-etad-yakṣham-iti**

The Being then (*nidadhaav*) placed (*tṛiṇan*) a blade of grass in (*tasmai*) front of the
fire and asked the fire (*daheti*) to burn (*etad*) it. The fire (*upa-preyaaya*)
approached (*tad*) that blade of grass with (*sarva*) all of its (*javena*) might but was
(*na*) not (*shashaaka*) able (*dagdhum*) to burn (*tan*) it. (*sa*) The fire (*eva*) then
(*nivavṛite*) left (*tata*) that placing uttering “I (*itad*) was (*na*) not (*ashakam*) able to
(*vijñāatuñ*) find out (*yad*) who (*iti*) this (*yakṣham*) being (*etad*) is.”

सातवे मन्त्र में अग्नि की असफलता के बाद वायु को जानकारी लाने के लिए भेजा गया ।

अथ वायुमब्रुवन्वायवेतद्विजानीहि

किमेतद्यक्षमिति तथेति ॥७॥

अथ वायुम् अब्रुवन् वायो एतत् विजानीहि

किम् एतत् यक्षम् इति तथा इति ॥

(अथ) उसके बाद सबने (वायुम्) वायु को (अब्रुवन्) कहा (वायो) हे वायु! (एतत्) यह (विजानीहि) पता लगाओं की (एतत्) यह (यक्षम्) यक्ष (किम्) कौन है । वायु ने (इति) इस आग्रह को (तथा) वैसे (इति) ही स्वीकार कर कहा बहुत अच्छा ।

In the seventh mantra Wind was deputed for the mission after Fire's failure.

**7. Om atha vaayum-abruvan-vaayav-etad-vijaaneehi
kim-etad-yakṣham-iti tath-eti**

(atha) Then They (abruvan) said to (vaayum) the wind, (vaayav) O Wind! Please (vijaaneehi) inquire (etad) that (kim) who (etad) this (yakṣham) great being is. The wind accepted (iti) this request (tath) as (eti) is.

आठवे मन्त्र में वायु ने यक्ष को अपना परिचय दिया ।

तदभ्यद्रवत्तमभ्यवदत्कोऽसीति वायुर्वा

अहमस्मीत्यब्रवीन्मातरिश्वा वा अहमस्मीति ॥८॥

तत् अभ्यद्रवत् तम् अभ्यवदत् कः असि इति वायुः वै

अहम् अस्मि इति अब्रवीत् मातरिश्वा वै अहम् अस्मि इति ॥

(तत्) वायुदेव (अभ्यद्रवत्) तुरन्त भागकर यक्ष के पास पहुँचे । यक्ष ने (तम्) उससे (अभ्यवदत्) पूछा तू (कः) कौन (असि) है? वायुदेव ने (वै) निश्चयपूर्वक (इति) यह (अब्रवीत्) कहा (अहम्) मैं (वायुः) वायु (अस्मि) हूँ (अहम्) मैं (मातरिश्वा) समस्त प्राणियों का प्राणदायक (अस्मि) हूँ ।

In the eighth mantra the wind boasts its quality.

**8. Om tad-abhyadravat-tam-abhyavadat-ko'seeti vaayur-vaa
aham-asme-ety-abraveen-maatarishvaa vaa aham-asmeeti**
(*tad*) The wind (*abhyadravat*) quickly went close to the unknown being. Then that
being (*abhyavadat*) asked (*tam*) him “(*ko*) Who (*ase*) are you?” The (*vaayur*) wind
(*vaa*) forcefully (*abraveen*) said “(*aham*) I (*asme*) am the (*maatarishvaa*) breath,
the sustainer of all life.”

नवे मन्त्र में वायु ने अपने बल का बखान किया ।

तस्मिंस्त्वयि किं वीर्यमित्यपीदम्

सर्वमाददीय यदिदं पृथिव्यामिति ॥९॥

तस्मिन् त्वयि किम् वीर्यम् इति अपि इदम्

सर्वम् आददीय यत् इदम् पृथिव्याम् इति ॥

उसने (तस्मिन्) उस वायु से पूछा (त्वयि) तेरा (किम्) क्या (वीर्यम्) बल है? वायु ने (इति) यह
कहा (इदम्) इस (पृथिव्याम्) पृथ्वी पर (यत्) जो कुछ (अपि) भी है (इदम्) वह (सर्वम्) सब मैं
(आददीय) उडाकर ले जा सकता हूँ ।

In the ninth mantra the wind boasts its quality.

**9. Om tasmins-tvayi kim veeryam-ity-ape-edam
sarvam-aadadeeya yad-idam prithivyaam-iti**

He then asked (*tasmins*) the wind, “(*kim*) What is (*tvayi*) your (*veeryam*)
capability?” The wind said “(*sarvan*) Everything (*yad*) that (*ity*) there is (*ape*) on
(*idam*) this (*prithivyaam*) Earth (*aadadeeya*) I can blow (*edam*) it (*iti*) all.”

दसवे मन्त्र में वायु का शक्ति परिक्षण है ।

तस्मै तृणं निदधावेतदादस्वेति तदुपप्रेयाय सर्वजवेन तन्न शशाकादातुं

स तत एव निववृते नैतदशकं विज्ञातुं यदेतद्यक्षमिति ॥१०॥

तस्मै तृणम् निदधौ एतत् आदस्व इति तत् उप प्र इयाय सर्वजवेन तत् न शशाक आदातुम्

सः ततः एव निववृते न एतत् अशकम् विज्ञातुम् यत् एतत् यक्षम् इति ॥

यक्ष ने (तस्मै) उसके सामने एक (तृणम्) तिनका (निदधौ) रखा और (इति) यह कहा कि (एतत्) इसको (आदस्व) उडाकर दिखाओ । वायु (सर्वजवेन) पूरे जोर के साथ (तत्) उस तिनके के (उप) पास (प्र इयाय) गया परन्तु (तत्) उसको (आदातुम्) उडाने में (शशाक) समर्थ (न) नहीं हुआ । (एव) तब (सः) वह वायुदेव (ततः) वहाँ से (एतत्) यह कहता हुआ (निववृते) लौट आया कि (यत्) जो (इति) यह (यक्षम्) यक्ष है (एतत्) इसको (विज्ञातुम्) जानने में मैं (अशकम्) सफल (न) नहीं हुआ ।

In the tenth mantra the strength of the wind is being tested.

**10. Om tasmai tṛiṇan nidadhaav-etad-aadasv-eti
tad-upa-preyaaya sarva-javena tan-na shashaak-aadaatun
sa tata eva nivavṛite
na-itad-ashakam vijñāatuñ yad-etad-yakṣham-iti**

The Being then (*nidadhaav*) placed (*tṛiṇan*) a blade of grass in (*tasmai*) front of the wind and asked the wind (*aadasveti*) to blow (*etad*) it. The wind (*upa-preyaaya*) approached (*tad*) that blade of grass with (*sarva*) all of its (*javena*) might but was (*na*) not (*shashaaka*) able (*aadaatun*) to blow (*tan*) it. (*sa*) The wind (*eva*) then (*nivavṛite*) left (*tata*) that placing uttering "I (*itad*) was (*na*) not (*ashakam*) able to (*vijñāatuñ*) find out (*yad*) who (*iti*) this (*yakṣham*) being (*etad*) is."

ग्यारहवे मन्त्र में वायु की असफलता के बाद इन्द्र को जानकारी लाने के लिए भेजा गया ।

अथेन्द्रमब्रुवन्मघवन्नेतद्विजानीहि

किमेतद्यक्षमिति तथेति तदभ्यद्रवत्तस्मात्तिरोदधे ॥११॥

अथ इन्द्रम् अब्रुवन् मघवन् एतत् विजानीहि

किम् एतत् यक्षम् इति तथा इति तत् अभ्यद्रवत् तस्मात् तिरोदधे ॥

(अथ) उसके बाद सबने (इन्द्रम्) इन्द्र को (अब्रुवन्) कहा (मघवन्) हे ऐश्वर्ययुक्त इन्द्र! (एतत्) यह (विजानीहि) पता लगाओं की (एतत्) यह (यक्षम्) यक्ष (किम्) कौन है । इन्द्र ने (इति) इस आग्रह को (तथा) वैसे (इति) ही स्वीकार कर कहा बहुत अच्छा । इन्द्र (तत्) उस यक्ष की ओर (अभ्यद्रवत्) तेजी से गया परन्तु वह (तस्मात्) उसकी (इन्द्र की) (तिरोदधे) आँखों से ओझल हो गया ।

In the eleventh mantra Indra the lord of rain and thunder was deputed for the mission after Wind's failure.

**11. Om ath-endram-abruvan-maghavann-etad-vijaaneehi
kim-etad-yakṣham-iti tath-eti
tad-abhyadravat-tasmaat-tirodadhe**

(ath) Then They (abruvan) said to (endram) Indra the lord of rain and thunder, (maghavann) O Possessor of great wealth! Please (vijaaneehi) inquire (etad) that (kim) who (etad) this (yakṣham) great being is. Indra accepted (iti) this request (tath) as (eti) is. However, as Indra (abhyadravat) rushed towards (tad) that being, the unknown being suddenly became (tirodadhe) invisible to (tasmaat) him.

बारहवें मन्त्र में इन्द्र की भेंट उमा से होती है ।

स तस्मिन्नेवाकाशे स्त्रियमाजगाम बहुशोभमानामुमा९ हैमवतीं

ता९ होवाच किमेतद्यक्षमिति ॥१२॥

सः तस्मिन् एव आकाशे स्त्रियम् आजगाम बहुशोभमानाम् उमाम् हैमवतीम्

ताम् ह उवाच किम् एतत् यक्षम् इति ॥

(सः) वह (तस्मिन्) उस (एव) ही (आकाशे) आकाश में एक (बहुशोभमानाम्) बहुत सुन्दर, (हैमवतीम्) स्वर्ण आभूषणों से युक्त (उमाम्) उमा नाम वाली एक (स्त्रियम्) स्त्री को देखकर उसके पास (आजगाम) गया और (ताम्) उससे (ह) निश्चय पूर्वक (इति) यह (उवाच) पूछा “(एतत्) यह (यक्षम्) यक्ष (किम्) कौन है?”

तीसरा खण्ड उपमाओं से भरा हुआ है । अपनी बात समझाने के लिए उपनिषद्कार ने एक कहानी की रचना की है । इस कहानी में ब्रह्म का यक्ष के रूप में प्रकट होना काल्पनिक है वास्तविक नहीं । इसमें आए तीन देवता भी हमारी इन्द्रियाँ और आत्मा ही हैं । अग्नि का प्रकाश आँखों का प्रतीक है, वायु स्पर्शोद्भूत का प्रतीक है और इन्द्र जीवात्मा का प्रतीक है । इन तीनों में से जीवात्मा ही परमात्मा के सबसे निकट है और बुद्धि (उमा) की सहायता से ब्रह्म को जानने का प्रयास करती है ।

In the twelfth mantra Indra meets Uma.

**12. Om sa tasminn-eva-akaashe striyam-aajagaama
bahu-shobhamaanaam-umaam haimavateen
taam h-ovaacha kim-etad-yakṣham-iti**

(*tasminn*) There in the (*akaashe*) sky, (*sa*) he noticed a (*bahu*) very (*shobhamaanaam*) beautiful (*striyam*) woman named (*umaam*) Umaa, who was wearing various (*haimavateen*) ornaments. He (*aajagaama*) approached (*taam*) her and (*ovaacha*) asked “(*kim*) Who is (*etad*) this (*yakṣham*) being?”

The third part is filled with metaphorical references. The original author of this ancient text has woven a story to make his point. Here the emergence of God as a visible entity is metaphorical and not real. The three devatas in the story also represent our senses and soul. The light from the fire represents our eyes and the visible world around us. The wind represents the sense of touch and the abstract world around us. Finally, Indra represents our soul which is the closest to the God. Umaa represents our intellect. Our soul tries to perceive and understand God with the help of our intelligence.

चतुर्थ खण्ड

प्रथम मन्त्र में उमा ने इन्द्र को उत्तर दिया ।

सा ब्रह्मेति होवाच ब्रह्मणो वा एतद्विजये

महीयध्वमिति ततो हैव विदांचकार ब्रह्मेति ॥१॥

सा ब्रह्म इति ह उवाच ब्रह्मणः वै एतत् विजये

महीयध्वम् इति ततः ह एव विदांचकार ब्रह्म इति ॥

(सा) उसने (ह) विश्वास के साथ (उवाच) उत्तर दिया “(इति) यह (ब्रह्म) ब्रह्म ही है, तुम (इति) इस (ब्रह्मणः) ब्रह्म की (एतत्) इस (विजये) विजय में (वै) ही (महीयध्वम्) अपना महत्त्व समझो” । (ततः) तब इन्द्र ने (विदांचकार) जान लिया कि (ह) निश्चय (एव) ही (इति) यह यक्ष (ब्रह्म) ब्रह्म है ।

Part 4

In the first mantra Umaa replies to Indra.

**1. Om saa brahm-eti h-ovaacha brahmaṇo vaa etad-vijaye
maheeyadhvam-iti tato ha-iva vidaañchakaara brahm-eti**

(saa) She (h) confidently (ovaacha) replied “(eti) This is (brahm) God himself. You should (iti) most (vaa) definitely consider (etad) these (vijaye) victories by (brahmaṇo) God as the reason for your own (maheeyadhvam) greatness.” (tato) Then Indra (vidaañchakaara) realized that (eti) this being was (brahm) God (ha iva) indeed.

दूसरे व तीसरे मन्त्रों में इस कथानक में प्रयुक्त देवताओं की श्रेष्ठता पर विचार किया गया है।

तस्माद्वा एते देवा अतितरामिवान्यान्देवान्यदग्निर्वायुरिन्द्रस्ते

ह्येनन्नेदिष्ठं पस्पर्शुस्ते ह्येनत्प्रथमो विदांचकार ब्रह्मेति ॥२॥

तस्मात् वै एते देवाः अतितराम् इव अन्यान् देवान् यत् अग्निः वायुः इन्द्रः ते

हि एनत् नेदिष्ठम् पस्पर्शुः ते हि एनत् प्रथमः विदांचकार ब्रह्म इति ॥

यह (यत्) जो (अग्निः) अग्नि (आँख), (वायुः) वायु (स्पर्शेन्द्रिय) और (इन्द्रः) इन्द्र (जीवात्मा) हैं (ते) वह (हि) ही (एनत्) इस परमात्मा के (नेदिष्ठम्) अत्यन्त (पस्पर्शुः) पास पहुँचे और (ते) उन्होने (हि) ही (एनत्) इसको सबसे (प्रथमः) पहले (विदांचकार) जाना कि (ब्रह्म) ब्रह्म (इति) यही है । (तस्मात्) इसी कारण से (वै) ही (एते) ये (देवाः) देवता (इन्द्रियाँ) (अन्यान्) दूसरे (देवान्) देवताओं से (अतितराम्) बढ़कर (इव) ही हैं ।

The second and third mantra considers the importance of various devataas used in this story.

2. Om tasmaad-vaa ete devaa atitaraam-iva-anyaan-devaan-yad-agnir-vaayur-indras-te hy-enat-prathamam vidaañchakaara brahm-eti

(enan) These devatas i.e. (agnir) fire (sense of sight), (vaayur) wind (sense of touch) and (indras) Indra (soul), (te) they are the one (yad) who (pasparshus) reached (nedishtham) very close to God and (enat) they are the ones (te) who (vidaañchakaara) realized (prathamam) before everyone else that (eti) the being was (brahm) God (hy) indeed, (tasmaad) hence (ete) these three (devaa) devatas are (vaa) definitely considered (atitaraam) elevated compared to the (anyaan) other (devaan) devatas.

तस्माद्वा इन्द्रोऽतितरामिवान्यान्देवान्स ह्येनन्नेदिष्ठं
पस्पर्श स ह्येनत्प्रथमो विदांचकार ब्रह्मेति ॥३॥

तस्मात् वै इन्द्रः अतितराम् इव अन्यान् देवान् सः हि एनत् नेदिष्ठम् पस्पर्श सः हि एनत् प्रथमः विदांचकार
ब्रह्म इति ॥

(तस्मात्) उसी कारण से (वै) निश्चय पूर्वक (इव) यह मानो कि (इन्द्रः) इन्द्र (जीवात्मा)
(अन्यान्) इन तीनों (देवान्) देवताओं में भी (अतितराम्) श्रेष्ठ है क्योंकि (सः हि) उसी ने ब्रह्म
को (नेदिष्ठम्) सबसे पास से (पस्पर्श) महसूस किया और (प्रथमः) सबसे पहले (एनत्) यह
(विदांचकार) जाना कि (इति) यही (ब्रह्म) ब्रह्म है ।

3. Om tasmaad-vaa indro'titaraam-iva-anyaan-devaan-
sa hy-enan-nediṣṭham pasparsha
sa hy-enat-prathamo vidaañchakaara brahm-eti

And for (*tasmaad*) that very reason we should (*vaa*) without doubt comprehend
(*iva*) that (*indro*) Indra (the soul) has (*atitaraam*) the highest stature even (*anyaan*)
amongst these three (*devaan*) devatas because (*sa hy*) it (the soul) is the
(*nediṣṭham pasparsha*) closest to God and was the (*prathamo*) first one to
(*vidaañchakaara*) realize (*enan*) that (*enat*) this being was (*brahm*) God himself
(*eti*) indeed and none other.

अभी तक देवताओं को शरीर की इन्द्रियों के रूप में दर्शाया गया था । चौथे मन्त्र में जड प्रकृति
के बलों को देवताओं का स्वरूप मानते हुए उनके पीछे भी ईश्वर के बल को सार्थक माना है ।

तस्यैष आदेशो यदेतद्विद्युतो व्यद्युतदा३

इतीन्यमीमिषदा३ इत्यधिदैवतम् ॥४॥

तस्य एषः आदेशः यत् एतत् विद्युतः व्यद्युतद् आ३

इति इत् न्यमीमिषद् आ३ इति अधिदैवतम् ॥

(तस्य) उसी परब्रह्म का (एषः) यह (आदेशः) उपदेश है कि (यत्) जो (एतत्) यह (विद्युतः)
बिजली (इति आ३) सब ओर (व्यद्युतद्) चमकी और (आ३ इत्) सब ओर (न्यमीमिषद्)
चमककर छिप गई, (इति) वह (अधिदैवतम्) जड प्रकृति में ईश्वर के दिव्य बल द्वारा ही
सम्भव हुआ ।

Until now the divine powers (devataas) were being described as our sensory powers. The fourth mantra looks at the divine powers in various forces of Mother Nature and attributes those powers to the God as well.

4. Om tasya-iṣha aadesho yad-etad-vidyuto vyadyutad-aa3 ite-en-nyameemiṣhad-aa3 ity-adhidaivatam

(iṣha) It is (aadesho) proclaimed by (tasya) that God, that (ity) God's divinity is the force behind (adhidaivatam) Mother Nature, by virtue of (yad) which the (vidyuto) lightening displayed (etad) its (vyadyutad) brilliance (aa3 ite) all over for a brief moment (en) and then subsequently (nyameemiṣhad) disappeared.

पाँचवें मन्त्र में फिर से ब्रह्म को ही चेतन देवताओं को चलाने वाला बताया है।

अथाध्यात्मं यदेतद् गच्छतीव च

मनोऽनेन चैतदुपस्मरत्यभीक्षणं संकल्पः ॥५॥

अथ अध्यात्मम् यत् एतत् गच्छति इव च

मनः अनेन च एतत् उपस्मरति अभीक्षणम् संकल्पः ॥

(अथ) अब (अध्यात्मम्) चेतन देवताओं के सम्बंध में उपदेश देते हुए कहते हैं कि (यत्) जो (एतत्) यह (मनः) मन (गच्छति) दूर दूर चला जाता है (च) और (अभीक्षणम्) बार बार (एतत्) यह बीते हुए को (उपस्मरति) स्मरण करता है (च) या आगे के लिए नए (संकल्पः) संकल्प करता है, यह सब भी उस (अनेन) पापरहित ब्रह्म के कारण ही है।

The fifth mantra again proclaims that God is the power behind our mind.

5. Om atha-adhyaatmañ yad-etad gachchhate-eva cha mano'nena cha-itad-upasmaraty-abheekṣhṇan saṅkalpaḥ

(atha) Discussing the (adhyaatmañ) devatas facilitating life, he proclaimed that (yad) when (etad) this (mano) mind (gachchhate) wanders to distant lands (cha) and (abheekṣhṇan) continuously thinks and either (upasmaraty) remembers the past incidents (cha) or (saṅkalpaḥ) plans for future; (itad) this function is (eva) also attributable to that (anena) sinless God.

छठे मन्त्र में ईश्वर की उपासना का निर्देश है ।

तद्ध तद्वनं नाम तद्वनमित्युपासितव्यं स य एतदेवं
वेदाऽभि हैनं सर्वाणि भूतानि संवाञ्छन्ति ॥६॥

तत् ह तत् वनम् नाम तत् वनम् इति उपासितव्यम् सः यः एतत् एवम्
वेद अभि ह एनम् सर्वाणि भूतानि सम् वाञ्छन्ति ॥

(ह) निसंदेह (तत्) वह परमात्मा (इति) ही (वनम्) पूजनीय (नाम) नाम वाला है । (तत्) उसी
की (वनम्) एकान्त वन में ध्यान लगाकर (उपासितव्यम्) उपासना करनी चाहिए । (सः) जो
(यः) इस बात को (वेद) समझकर (एतत्) उसका पालन करता है, (एनम्) उसकी ओर (ह)
निश्चय ही (अभि) सब दिशाओं से (सर्वाणि) सब (भूतानि) प्राणी (सम् वाञ्छन्ति) आकृष्ट होते
हैं ।

The sixth mantra directs us to keep God in our thoughts all the time.

**6. Om tadd-ha tad-vanan naama tad-vanam-ity-upaasitavyan
sa ya etad-evam vedaa'bhi
ha-inan sarvaani bhootaani sam-vaañchhanti**

(ha) Without any doubt (tadd) that God is the only one (vanan naama) worthy of
our worship. We should, (vanam) in solitude, (upaasitavyan) meditate on (tad)
that (ity) God. (sa) One who (veda) understands (etad) this (evam) and (ya) acts
(inan) accordingly (tad) is (ha) most definitely, (sam vaañchhanti) liked by
(sarvaani) all (bhootaani) beings from (abhi) all directions.

सातवे मन्त्र में उपनिषद् ज्ञान को ही ब्रह्म ज्ञान बतलाया गया है ।

उपनिषदं भो ब्रूहीत्युक्ता त उपनिषद्
ब्राह्मीं वाव त उपनिषदमब्रूमेति ॥७॥

उपनिषदम् भोः ब्रूहि इति उक्ता ते उपनिषद्
ब्राह्मीम् वाव ते उपनिषदम् अब्रूम इति ॥

उपनिषद् के आरम्भ में शिष्य ने कहा था कि (भोः) “हे विद्वान! (उपनिषदम्) उपनिषद् का (ब्रूहि) उपदेश दिजिए” । गुरु यह (उक्ता) कहते हैं कि “हमने (ते) तुम्हे (ब्राह्मीम्) ब्रह्म ज्ञान सम्बन्धी (उपनिषद्) उपनिषद् का (अब्रूम) उपदेश दे दिया है । (इति) वह (उपनिषदम्) ज्ञान (वाव) निश्चय से (इति) यही है” ।

The seventh mantra tells us that the message contained in the Upaniṣhad is the true knowledge about God.

**7. Om upaniṣhadam bho broohe-ety-uktaa ta upaniṣhad
braahmeem vaava ta upaniṣhadam-abroom-eti**

At the beginning of this Upaniṣhad the disciple had asked “O (bho) Learned One! Please (broohe) tell me about the knowledge contained in the (upaniṣhadam) Upaniṣhad.” The teacher (uktaa) replies “I have (abroom) said (ta) to you the knowledge (braahmeem) about God as contained in (upaniṣhad) the Upaniṣhad. (vaava) Most definitely (eti) this is that (upaniṣhadam) knowledge.”

आठवे मन्त्र में ब्रह्म की प्राप्ति का मार्ग सुझाया गया है ।

तस्यै तपो दमः कर्मेति प्रतिष्ठा

वेदाः सर्वाङ्गानि सत्यमायतनम् ॥८॥

तस्यै तपः दमः कर्म इति प्रतिष्ठा

वेदाः सर्व अङ्गानि सत्यम् आयतनम् ॥

(तस्यै) उस ब्रह्म की प्राप्ति के लिए (इति) यही मार्ग है कि अपने (आयतनम्) जीवन के तौर तरीकों का (प्रतिष्ठा) आधार तीन नियमों को बनायें; पहला, (तपः) तप अर्थात् शारीरिक नियंत्रण, दूसरा, (दमः) दम अर्थात् मानसिक नियंत्रण व तीसरा (कर्म) कर्म अर्थात् धर्म के अनुसार कार्य करना और निष्क्रियता से दूर रहना । इसके लिए (सत्यम्) सत्य मार्ग पर चलते हुए (वेदाः) चारों वेदों और शिक्षा के (सर्व) सारे (छः) (अङ्गानि) अंगों का अध्ययन करें ।

The eighth mantra describes the way to be close to God.

**8. Om tasyai tapo damaḥ karm-eti pratiṣṭhaa
vedaḥ sarva-aṅgaani satyam-aayatanaṁ**

(eti) This is the way to become close to (tasyai) that God. One should (pratiṣṭhaa) base (aayatanaṁ) the structure of one's life on the three principles. First, (tapo) physical control i.e. controlling one's sensory organs and avoid over-indulgence; second, (damaḥ) mental control i.e. keeping one's thoughts positive and pure; and third, (karm) acting on the knowledge acquired and staying away from the inaction. Additionally, one should follow the path of (satyam) truth while acquiring the knowledge from four (vedaḥ) Vedas and (sarva) all of the six (aṅgaani) limbs of Vaidik knowledge.

अन्तिम मन्त्र उत्तम आचरण का लाभ बतलाता है ।

यो वा एतामेवं वेदापहत्य पाप्मानमनन्ते

स्वर्गे लोके ज्येये प्रतितिष्ठति प्रतितिष्ठति ॥९॥

यः वै एताम् एवम् वेद अपहत्य पाप्मानम् अनन्ते

स्वर्गे लोके ज्येये प्रतितिष्ठति प्रतितिष्ठति ॥

(यः) जो (वै) निश्चयपूर्वक (एताम्) इस ब्रह्म विद्या को (एवम्) इस प्रकार (वेद) समझकर, अपने जीवन को (पाप्मानम्) पाप से दूर (अपहत्य) हटाता है, वह उस (ज्येये) सर्वश्रेष्ठ (अनन्ते) नाशरहित (स्वर्गे) आनन्दमय (लोके) अवस्था को (प्रतितिष्ठति) प्राप्त करता है, अवश्य ही (प्रतितिष्ठति) प्राप्त करता है ।

The last mantra describes the benefits of righteous conduct.

**9. Om yo vaa etaam-evam veda-apahatya paapmaanam-anante
svarge loke jyeye pratitiṣṭhati pratitiṣṭhati**

(yo) One who with (vaa) determination (veda) understands (etaam) this knowledge and acts (evam) accordingly keeping oneself (apahatya) away from (paapmaanam) sin, that person (pratitiṣṭhati) attains the (jyeye) most desirable and (anante) indestructible (loke) state of (svarge) bliss (pratitiṣṭhati) for sure.